<Literature><Letters/Diaries/speeches><Singh,giani Zail><Rastrapati Gaini Zail Singh Bhawan><1987><Prakashan Vibhag><New Delhi><80-85><N/A><Singh, Z-Rastrapati Bhawan-Lds-O><Abha Sood>

+ सूडान लोकतांत्रिक गणराज्य के राजदूत श्री अब्दुल मोनीम महमूद मुस्तफा का
परिचय-पत्र स्वीकार करते हुए, नयी दिल्ली,
११, फरवरी १९८३
महामान्य!
भारत में सूडान के लोकतान्त्रिक गणराज्य के असाधारण राजदूत और पूर्ण-अधिकारी
के रूप में आप यहां तशरीफ लाए हैं। मुझे आपका स्वागत करते हुए बहुत प्रसन्नता
हो रही है।
एक लम्बे अर्से से भारत और सूडान के गहरे सम्बन्ध रहे हैं। दोनों देशों की
सरकारों ने साम्राज्यवादी शासन से आजादी हासिल करने के बाद अपने-अपने देश की
जनता के आर्थिक विकास और उन्हें सामाजिक न्याय दिलाने के लिए कोशिशें की हैं।
मुझे यह जानकर खुशी है कि हाल ही के वर्षों में भारत और सूडान के बीच
आदान-प्रदान बढ़ा है, जिससे हम विकास सम्बन्धी अपने तजुर्बो का लाभ एक-दूसरे को
दे सके हैं।
विदेशी सम्बन्धों में भी भारत और सूडान के विचार बहुत से

अन्तर्राष्ट्रीय
मुद्दों के बारे में एक जैसे हैं। अतीत में दोनों ने उपनिवेशवाद और जातिवाद के
ख़िलाफ लड़ाई की है। आज भी जातिवाद के खिलाफ और शान्ति के लिए ये दोनों देश
संघर्ष कर रहे हैं। अफ्रीकी एकता संगठन को मज़बूत बनाने के लिए राष्ट्रपति
परमश्रेष्ठ गफ्फार मुहम्मद नीमेरी की कोशिशों की हम सराहना करते हैं।
अफ्रीकी
इतिहास के इस नाजुक मोड़ पर इस संगठन की खासतौर से अहमियत है। भारत और सूडान
दोनों ही गुटनिरपेक्ष राष्ट्र हैं और दोनों ही इस आन्दोलन को मज़बूत बनाने के
लिए वचनबद्ध हैं। हमें यकीन है कि सूडान का लोकतान्त्रिक गणराज्य दिल्ली में
होने वाले सातवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन को पूरी तरह कामयाब बनाने में अपना
योगदान देगा।
महामान्य, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि राष्ट्रपति परमश्रेष्ठ गफ्फार मुहम्मद
नीमेरी को मेरा अभिवादन और भारत सरकार तथा भारतीय जनता की शुभकामनाएं, सूडान के
लोक--~तांत्रिक गणराज्य की सरकार और वहां की जनता तक पहुंचा दें।

इन्दिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज़ के
शिलान्यास समारोह के अवसर पर,पटना,

१२ फरवरी १९८३

मुझे यहां आकर और इन्दिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्सेज की आधारशिला रखकर
बड़ी प्रसन्नता हुई है। इस संस्थान का नाम हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा
गांधी के नाम पर ठीक ही रखा गया है, क्योंकि वे जनता की भलाई में गहरी दिलचस्पी
रखती हैं। सभी लोगों के लिए डाक्टरी सुविधा की व्यवस्था करने में, हमारी
सामाजिक-आर्थिक विकास संबंधी योजनाओं में खास तरज़ीह दी गई है। मुझे यकीन है कि
इस संस्थान के बन जाने पर यह न केवल इस राज्य के बल्कि आस-पास के राज्यों के
लोगों की ज़रूरतों को काफी हद तक पूरा कर सकेगा।

मुझे यह बताया गया है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में बिहार अभी अखिल भारतीय स्तर
की तुलना में बहुत पीछे है। इसे इस स्तर तक पहुंचने के लिए अभी बहुत
तेज़ी से
काम करना होगा। बिहार में ११,६८६ व्यक्तियों के पीछे एक डाक्टर है, जब कि अखिल
भारतीय औसत ३,५५५ व्यक्तियों के पीछे एक डाक्टर का है। इसी प्रकार अस्पताल में
बिस्तरों के मामले में भी बिहार अखिल भारतीय औसत से बहुत पीछे है। बिहार में
२,७७५ व्यक्तियों के लिए केवल एक बिस्तर की व्यवस्था है, जब कि अखिल भारतीय

औसत १,४१२ व्यक्तियों के लिए एक अस्पताली बिस्तरे का है। इसके अलावा इस राज्य
में अच्छे इलाज की आधुनिक सुविधाएं भी नहीं हैं, इससे जनता को काफी मुश्किलें
उठानी पड़ रही हैं। उन्हें ऐसे इलाज के लिए दिल्ली, चण्डीगढ़, बम्बई और वेलोर
जैसी जगहों पर जाना पड़ता है, जिसमें उनका बहुत खर्च होता है। इसलिए यह संस्थान
देश के इस भाग के लोगों की डाक्टरी जरूरतों को काफी हद तक पूरा कर सकेगा। मैं
समझता हूं कि दिल्ली और कलकत्ता के बीच कोई भी ऐसा आधुनिक मेडिकल इंस्टीट्यूट
नहीं है, जहां इलाज की अच्छी और आधुनिक सुविधाएं मौजूद हों। लखनऊ में भी ऐसा ही
एक संस्थान संजय गांधी पोस्ट-ग्रजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज बन रहा है,
जिसकी आधारशिला मेरे पूर्ववर्ती राष्ट्रपति जी ने १४ दिसम्बर १९८० को रखी थी। लखनऊ
में संजय गांधी संस्थान और यहां इन्दिरा गांधी संस्थान के बन जाने पर सम्पूर्ण गंगा
मैदान के लोगों को इलाज की अच्छी और आधुनिक सुविधाएं मिल सकेंगी।

बिहार सरकार इस संस्थान की स्थापना के लिए बधाई की पात्र है। यह संस्थान
पोस्ट-~डॉक्टरल की पढ़ाई और रिसर्च का कार्य करेगा और विशेष रूप से गर्म जलवायु

वाले प्रदेशों में होने वाली बीमारियों की ओर ध्यान देगा। यह बड़े हर्ष की बात
है कि इस संस्थान की जिम्मेदारी प्राथमिक केन्द्रों से लेकर मेडिकल कॉलिजों और
ज़िला अस्पतालों तक के सभी स्तरों पर चिकित्सा और स्वास्थय की देखरेख के स्तर
को ऊंचा उठाना होगा। चिकित्सा के हर विषय की क्षेत्रीय इकाइयों का सम्बन्ध इस
संस्थान से रहेगा। इसके अलावा संस्थान जिलों के दूसरे अस्पतालों के स्टाफ के
सहयोग से चलते-फिरते कैंम्पों का आयोजन करेगा। इससे बिहार राज्य को एक अच्छी
स्वास्थ्य सेवा प्रणाली मिल सकेगी। मैं उम्मीद करता हूं कि इस संस्थान में
अच्छे पढ़-लिखे डाक्टर काम करेंगे और डाक्टरी सेवा और स्वास्थ्य संबंधी देख-भाल
के लिए राज्य के दूरदराज़ के और उपेक्षित क्षेत्रों तक डाक्टरी सेवा और
स्वास्थ्य सम्बन्धी देखरेख के काम में सहायता करेंगे।

स्वास्थ्य और डाक्टरी सेवाओं के विकास को हमारी पंचवर्षीय योजनाओं में ऊंची
तरज़ीह दी गई है। जहां तक अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या तो बढ़ाने का संबंध
है, हमने पिछले तीस वर्षों में काफी प्रगति की है। डाक्टरी शिक्षा के क्षेत्र
में हमने बेहद तरक्की की है। फिर भी डाक्टरी सुविधाएं बहुत से लोगों, खासकर

देहाती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों तक अभी नहीं पहुंची हैं। हम अपने देश को
सही मामलों में कल्याणकारी राज्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे सभी
नागरिकों को उनके जीवन से लेकर मृत्यु तक सामाजिक-सुरक्षा की व्यवस्था की जा
सके। डाक्टरी सहूलियतें दिया जाना किसी भी सुरक्षा प्रणाली का एक अहम् हिस्सा
होता है।
इस तरह के उच्च और विशिष्ट डाक्टरी संस्थानों, जिनमें काफी रुपया लगता है, को
विकसित करने के अलावा, मैं महसूस करता हूं कि सफाई अभियान पर विशेष ध्यान दिया
जाए, जिससे कि स्वास्थ्य ठीक रहे और दवाई आदि की अधिक आवश्यकता न पड़े। इससे कम
खर्च से अच्छे नतीजे को नकलेंगे ही, साथ ही महामारी तथा अन्य बीमारियों की
रोकथाम भी हो सकेगी। हमें याद रखना होगा कि "तनदुरुस्ती हजार नियामत है" और यह
बात समाज और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती है।
मैं उम्मीद करता हूं कि यह संस्थान जल्दी ही तैयार हो जाएगा और लोगों की लम्बे
अर्से से चली आ रही जरूरतों को पूरा करेगा। आप लोगों ने मुझे यहां बुलाया है,
उसके लिए मैं आपका धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्द !

नागरिक अभिनन्दन स्वीकार करते हुए, पटना,

१२ फरवरी १९८३
इस ऐतिहासिक नगर की ओर से जो मान-पत्र मुझे आपने दिया है और जिस प्रेम के साथ
मेरा स्वागत किया है, उसके लिए मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूं। इससे पहले
भी मैं कई बार पटना आ चुका हूं, परन्तु राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद यहां
आने का यह मेरा पहला अवसर है।
पटना, भारत का एक बहुत पुराना शहर है, जिसे इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान हासिल
है। यही वह महानगर है जो प्राचीन काल में पाटलीपुत्र के नाम से चन्द्रगुप्त
मौर्य और अशोक महान् की राजधानी रहा था। इसी महानगरी से चाणक्य जैसे कुशल
राजनीतिज्ञ ने संसार को 'अर्थ--~शास्त्र' जैसा राजनीति का बहुमूल्य ग्रन्थ दिया
था। बिहार की इस धरती से ही महात्मा बुद्ध ने सारे विश्व को शान्ति और मानव
प्रेम का संदेश दिया था। इसी भूमि से भगवान महावीर ने अहिंसा की शिक्षा हमें दी
थी। इस नगर के लिए ही नहीं, सारे भारत के लिए यह कितने गौरव की बात है कि ईसा
के लगभग तीन सौ साल पहले भी पाटलीपुत्र नगर का प्रशासन लोकतंत्र के ढांचे पर
चलता था, जो संसार के इतिहास में एक मिसाल है। यहां के नगर प्रशासन की शोहरत

दूर-दूर के देशों तक फैली थी।
इस पवित्र भूमि पर ही श्री गुरु गोविंद सिंहजी साहिब का जन्म हुआ था,
जिन्होंने आज से लगभग ती-सौ वर्ष पहले सारे भारत में राष्ट्रीय चेतना की
ज्योति जगाई थी और मानवता के उद्धार का अमर संदेश दिया था। उन्होंने सारे देश
को संगठित होकर अत्याचारों के ख़िलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा दी थी। उनका यह
सन्देश आज भी देश के नौजवानों का मार्ग-दर्शन कर रहा है। उनकी बेमिसाल
कुर्बानियां दुनिया के इतिहास में सदा अमर रहेंगी। गुरु जी मनुष्य की एक
जाति
मानते हैं, वे फरमाते हैं :

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी कोई जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी कोऊ जती अनमान बो,
हिन्दू, तुरक कोऊ राफजी इमाम शाफी,
मानस की जात सभै एक पहचानबो।

आज़ादी की पहली लड़ाई में यहां को लोगों ने बड़ी-बड़ी कुर्बानियां दी थीं। मुझे
आज भी वीर कुंवर सिंह की याद आ रही है, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से डट कर
लोहा लिया था। यहां का शहीद स्मारक उन शहीदों की याद दिला रहा है, जिन्होंने
आज़ादी की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।
पटना की मौजूदा नगरपालिका का इतिहास सौ साल से अधिक

पुराना है। यह नगरपालिका
कितनी खुशकिस्मत है कि देशरत्न डा. राजेन्द्र प्रसाद जैसे महान नेता इसके
चेयरमैन रह चुके हैं। साथ ही नवाब सरफराज हुसेन खां, श्री के. बी. सैयद फज़ल
इमाम और खान बहादुर एस. एम. इस्माइल जैसे दूर-अन्देश नेता भी इस पद का सुशोभित
कर चुके हैं।
इस नगर को राष्ट्रपति महात्मा गांधी की कर्मभूमि रहने का सौभाग्य प्राप्त है।
भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद और लोकनायक जय प्रकाश नारायण का
भी यह नगर कार्य-~स्थल रहा है। इस नगर के सभी मत-मतान्तरों, सम्प्रदायों और सभी
वर्गों के लोगों ने आज़ादी की लड़ाई में कन्धे से कन्धा मिलाकर भाग लिया था।
राष्ट्रपति एकता को बनाए रखने में इस नगर का सदा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
मैं इस मौके पर इस नगर के प्रसिद्ध पुस्तकालय खुदा बख्श लाइब्रेरी का भी ज़िक्र
करना चाहूंगा, जहां देश और विदेश से आलिम-फाज़िल लोग रिसर्च करने आते हैं। यह
बड़े गौरव की बात है कि पिछले वर्ष यहां एशिया का सबसे बड़ा पुल 'महात्मा गांधी
सेतु' बनकर तैयार हो गया है। इससे इस शहर की रौनक तो बढ़ी ही है, साथ ही इससे

यातायात में भी बड़ी सुविधा मिली है।
प्रत्येक नगर की जहां अच्छाइयां होती हैं, वहां उसकी कुछ अपनी समस्याएं भी होती
हैं। देश के दूसरे महानगरों की तरह ही इस नगर की आबादी भी बढ़ी है और नगर का
विस्तार भी हुआ है। बढ़ती हुई आबादी के साथ समस्याओं का बढ़ना भी कुदरती बात
है। इनके हल के लिए यहां के अनुभवी मेयर और कुशल सदस्यगण प्रयत्नशील हैं। मुझे
आशा है कि इस महानगर के लोगों, यहां के प्रशासकों और सरकार को इस बढ़ते हुए शहर
के लिए सिवरेज, जल की पूर्ति और उसके निकास की उचित व्यवस्था करने में सफलता
मिलेगी।
बड़े शहरों की एक समस्या गन्दी बस्तियों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन को
ऊचां उठाना भी है। वहां सफाई और रोशनी की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए और
उन्हें सभी नागरिक सुविधाएं दी जानी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि नगर-निगम समाज
के कमज़ोर और पिछड़े वर्ग के लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास की
तरफ विशेष
ध्यान देगा और लोगों को डाक्टरी सहूलियतें मुहैया कराने, बच्चों की शिक्षा और
उनके स्वास्थ्य के लिए उचित कदम उठाएगा।
मेयर महोदय, मैं एक बार फिर आपका और आपके साथियों तथा

यहां के नागरिकों को
धन्यवाद देता हूं। जिस प्रेम और मुहब्बत से आप लोगों ने मेरा स्वागत और सत्कार
किया है उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूं। इस प्यार और स्नेह से मुझे निश्चय ही
अपने कर्तव्यों को निभाने में बल मिलता है। मेरी कामना है कि लोगों की
अधिक-से-अधिक भलाई के लिए आपको अपने रचनात्मक कार्यों में
सफलता हासिल हो।

जय हिन्द !

दाइजोक्यो बौद्ध मंदिर के उद्घाटन के अवसर पर भाषण, बोध गया,
१३ फरवरी १९८३

मुझे आज यहां दाइजोक्यो बौद्ध मंदिर के उद्घाटन समारोह में आकर बड़ी प्रसन्नता
हुई है। भारत भगवान बुद्ध की जन्म-भूमि है। उनकी शिक्षा सारे संसार में फैली है
और बौद्ध धर्म दुनिया का एक महान धर्म है, जिसके मानने वाले लोग अनेक देशों में
मौजूद हैं। हाल के वर्षों में बौद्ध धर्म और उसकी शिक्षाओं में फिर से लोगों की
रुची बढ़ रही है। दुनिया के दूसरे धर्मों की तरह ही बौद्ध धर्म में भी कई
विचारधाराएं हैं। इतिहास बताता है कि महान विचारकों और भक्तों ने समय-समय पर
आवश्यकता के अनुसार नयी विचारधाराएं लोगों के सामने रखी हैं। इसी प्रकार जापान

के स्वर्गीय परम आदरणीय तातसूको सूजियामा ने भी दाइजोक्यो सम्प्रदाय की
स्थापना
की और १९१४ में जापान के नागोया शहर में एक सुन्दर मंदिर बनाया। बौद्ध
शास्त्रों के गहन अध्ययन के बाद उन्हें कमल-सूत्र ने विशेष रूप से प्रभावित
किया। इसे वह सारे गुणों का सार मानती थीं। उन्होंने कमल-सूत्र के सिद्धांत को
अपने दाइजोक्यो सम्प्रदाय का आधार बनाया। बोध गया में जहां भगवान बुद्ध को
ज्ञान हुआ था, वहां एक मंदिर बनाने का उनका सपना अब साकार हो गया है। इस कार्य
के लिए बिहार सरकार ने उदारता के साथ १९७८ में दो एकड़ भूमि दान की थी, जिस पर
इस सुन्दर मंदिर का निर्माण किया गया है।

भगवान बुद्ध ने हमें शिक्षा दी है कि दुखों से छुटकारा न तो भोग और न ही अपने
शरीर को यातना देने से सम्भव है। इन दोनों के बीच का एक मध्यम मार्ग है-अष्टांग
मार्ग अर्था-उचित विचार, उचित इच्छा, उचित वाक्य, उचित व्यवहार , उचित रहन-सहन,
उचित प्रयास, उचित बुद्धि और उचित ध्यान। यही एक रास्ता है, जिससे मन की
शान्ति, उत्तम बुद्धि और ज्ञान हासिल होता है। यही वे अमर सिद्धान्त हैं, जो
संसार के हर धर्म में मौजूद हैं।

भगवान बुद्ध की शिक्षा, भारत की तहज़ीबी विरासत का एक अटूट हिस्सा है। उनकी
शिक्षा का सार है-सत्य और अहिंसा, जिसकी मौजूदा दुनिया को बहुत जरूरत है। हम
मानव इतिहास के ऐसे दौर से गुजर रहे हैं, जहां मुल्कों में हथियारों की ऐसी
पागल होड़ लगी हुई है, जिसमें मानवता ही खतरे में पड़ गई है। नाजुक घड़ी में
दुनिया के राष्ट्रों का ध्यान भगवान बुद्ध के संदेश की ओर दिलाना जरूरी हो गया
है। मुझे यकीन है कि यह मंदिर, जिसका आज उद्घाटन हो रहा है, दुनिया के लोगों
में सद्भावना और भाई-चारे के संदेश को फैलाने में सहायक होगा। मुझे यह जानकर
खुशी हुई है कि यहां यात्रियों के लिए एक विश्राम-गृह और एक टैक्नीकल ट्रैनिंग
केन्द्र कायम करने की योजना है। इसके साथ ही दूसरे कल्याणकारी काम भी शुरू किए
जाएंगे। मैं दाईजोक्यो सम्प्रदाय के अध्यक्ष और मुख्य मठाधीश परम आदरणीय वाई.
सुगीसाकी का महात्मा बुद्ध की इस भूमि में स्वागत करता हूं, जो इस मंदिर के
उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए जापान से यहां पधारे हैं।
मैं मंदिर के अधिकारियों को भी धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मुझे यहां बुलाया
और उद्घाटन समारोह में शामिल होने का मौका दिया है। मैं उनके कार्य की सफलता की

कामना करता हूं।
जय हिन्द !
खुदाबख़्श ओरियन्टल पब्लिक लाइब्रेरी के नये भवन के उद्घाटन के अवसर पर, पटना,
१४ फरवरी १९८३
मुझे आज यहां आप लोगों के बीच आकर और खुदाबख़्श पब्लिक लाइब्रेरी के नये भवन का
उद्घाटन करते हुए प्रसन्नता हो रही है। इस लाइब्रेरी में तारीखी अहमियत की
बहुत-सी प्राचीन और दुर्लभ पाण्डुलिपियां तथा बहुत ही सुन्दर चित्र-कलाओं के
मूल नमूने मौजूद हैं, जिनके कारण यह संसार भर के विद्वानों में प्रसिद्ध है।
इस
पुस्तकालय में अरबी और फारसी की पाण्डुलिपियों का बहुत बड़ा भंडार है। इतना
बड़ा भंडार शायद सारे अरब संसार में भी नहीं है। मुझे यह जानकर बड़ी खुशी होती
है कि इस लाइब्रेरी में दुनिया के तकरीबन सभी मुल्कों से जाने-~माने विद्वान और
रिसर्च स्कॉलर आते हैं।
मैं मुहम्मद बख़्श और खुदाबख़्श को श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं,
जिन्होंने इल्म का इतना बड़ा खजाना जमा किया और जनता को पेश किया। इस जख़ीरे को
देखने से पता चलता है कि इस्लाम ने अनेक तरीकों से भारत की संस्कृति में

घुल-मिलकर एक ऐसी मिली-जुली तहज़ीब को बनाने और संवारने में मदद की है, जिसे
कभी भी अलग-अलग हिस्सों में नहीं बांटा जा सकता। इस लाइब्रेरी को १९६९ में संसद
के एक एक्ट द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया था, जो एक मुनासिब
कदम था।
मुझे बताया गया है कि यह लाइब्रेरी भारत और विदेशों के विद्वानों को रिसर्च
सामग्री भेजती है और उनके अनुरोध पर उन्हें साहित्य संबंधी जानकारी भी देती है
तथा आवश्यक प्रतिलिपियां और माइक्रो फिल्में भी मुहैया कराती है। यह बहुत अच्छी
बात है कि अलीगढ़, रामपुर और फुलवारी शरीफ जैसी बड़ी-बड़ी लाइब्रेरियों की
दुर्लभ पाण्डुलिपियों की माइक्रो फिल्में तैयार करा ली गई है, और कुछ नायाब
किताबों को फिर से छपवाया जा रहा है। मुझे इस बात से बहुत खुशी हुई कि यह
लाइब्रेरी इस कीमती सामग्री को बाहरी दुनिया तक पहुंचाने की खातिर एक तिमाही
रिसाला भी निकाल रही है। मुझे यह भी बताया गया है कि इस लाइब्रेरी का और अधिक
विकास करके इसे एक सम्पूर्ण और आत्मनिर्भर रिसर्च सेंटर बनाया जा रहा है।